Indian Streams Research Journal
Vol.1,Issue.V/June; 12pp.1-4
प्रो. असरारूल गनी,
ISSN:-2230-7850

Research Papers

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती रेखा सूर्यवंशी
सहायक प्राध्यापक,
रेणु शिक्षा महाविद्यालय, मण्डीदीप,
जिला–रायसेन (म.प्र.)

राधिका चौधरी
सहायक प्राध्यापक,
एच.एल. अग्रवाल कॉलेज ऑफ एजूकेशन,
इटारसी (म.प्र.)

प्रो. असरारूल गनी,
प्राध्यापक, एन.ई.एस. शिक्षा महाविद्यालय,
होशंगाबाद (म.प्र.)

प्रस्तावना :–

शिक्षा मनुष्य जीवन के ज्ञान की परिधि को विस्तृत करने की प्रणाली है, क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य का बाहरी व आंतरिक विकास करती हैं। शिक्षा व्यक्ति में अच्छी अभिवृत्तियों, क्षमताओं का विकास करती है, जिसके द्वारा वह अपने, वातावरण पर नियंत्रण रख सकता है और अपनी संभावनाओं को पूरा कर सकता है। शिक्षा विकास की संवाहक है। शिक्षा समाज व विकास के संबंध की अभिव्यक्ति एवं प्रगति की अधिष्ठात्री है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही शिक्षा का स्वरूप अत्यन्त ज्ञानपरक, सुव्यवस्थित और सुनियोजित था। शिक्षा के द्वारा मनुष्य का जीवन विशुद्ध, प्रज्ञा सम्पन्न, परिष्कृत और समुन्नत ही नहीं होता, अपितु सात्विक और नैतिक निर्देशों का पालन करता हुआ सन्मार्ग पर चलकर विकसित होता है। "मनुष्य का जीवन शिक्षा और ज्ञान से ही धर्म प्रवण, नैतिक मूल्यों से युक्त, उच्चादर्शो से सम्बन्धित और चहुमुखी व्यक्तित्व से युक्त होता है।"[1]

"उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचना ही नहीं देती, अपितु हमारे जीवन को समूचे अस्तित्व के अनुकूल बनाती है।"[2] – टैगोर
व्यक्ति अपने जीवन में अनेकों प्रकार के अनुभवों को प्राप्त करता है और इन्हीं अनुभवों के आधार पर व्यक्ति में मनोभावों का जन्म होता है, जो उन्हें पसन्द या नापसंद कार्यों को करने के लिए प्रेरित करते हैं। अंततः व्यक्ति के यही मनोभाव अभिवृत्ति का स्वरूप धारण कर लेते हैं। अभिवृत्ति एक मानसिक एवं स्नायुविक तत्परता है जो व्यक्ति को निर्देशित करती है या उस पर ऐसा गत्यात्मक प्रभाव डालती है जिसके फलस्वरूप वह अपने सम्पर्क में आने वाली वस्तुओं और परिस्थितियों के प्रति व्यवहार करता है। अभिवृत्ति का संगठन व अर्जन व्यक्ति सामान्यतयाः अनुभवों के द्वारा प्राप्त करता है। इसलिए अभिवृत्तियों के निर्माण में परिवार, समाज, विद्यालय व शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान होता है।

थर्स्टन 1946 – ''अभिवृत्ति किसी एक मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति संबधी धनात्मक एवं नकारात्मक भाव की मात्रा व्यक्त करती है।''[3] – थर्स्टन'

शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति बुद्धि के स्तर पर नहीं है। यह घर के वातावरण पर बहुत अधिक निर्भर रहती है। यदि माता–पिता का शिक्षा के प्रति झुकाव अच्छा तथा उचित है तो बच्चों का भी शिक्षा के प्रति उसी प्रकार का झुकाव या दृष्टिकोण विकसित होता है। प्रत्येक व्यक्ति क्षमता, अभिवृत्ति, मूल्य, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, बुद्धि, व्यक्तित्व एवं कार्य कुशलता आदि में एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। सामान्य रूप से उन परिवारों के बालक अधिक स्वस्थ एवं विकसित होते हैं, जो सामाजिक–आर्थिक स्तर में ऊँचे होते हैं। निम्न आय वर्ग के परिवारों के बच्चे अधिकतर शारीरिक दोषों से ग्रसित होते हैं। वहीं उच्च आय वर्ग के बच्चे बुद्धि तथा ज्ञानार्जन में भी उत्तम होते हैं।

कुमार योगेश 1989 का अध्ययन यह बताता है कि सामान्य वर्ग के छात्रों की अभिवृत्तियां जनजातिय वर्ग के छात्रों की अपेक्षा उच्च स्तर की थीं। इसमें जातिय एवं जनजातिय वर्गों का शालाओं में अभिवृत्ति स्तर अलग था। जनजातीय क्षेत्रों के छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक रूचियों का भी अंतर था।[4]

छात्र द्वारा विभिन्न विषयों की मुख्य सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक परीक्षाओं में कुल प्राप्त अंकों को विद्यार्थी की उपलब्धि के रूप में माना जाता है।

''उपलब्धि परीक्षण एक निश्चित कार्यक्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है, उसकी माप करते हैं।''[5] – माथुर

शिक्षा तथा उपलब्धि का गहरा संबंध है। शिक्षा के माध्यम से उपलब्धि के मार्ग पर पहुंचा जा सकता है। एक ओर यह हमें उन्नति का मार्ग दर्शाती है, तो दूसरी ओर सफलता की ओर अग्रसर करती है।

खान हुजेफा, गोहर सिंह, संजय (2005) – "जिन देशों में साक्षरता सौ प्रतिशत है, वह देश विकसित देशों की श्रेणी में आता है।''[6]

उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Please cite this Article as : *प्रो. असरारूल गनी ,श्रीमती रेखा सूर्यवंशी* & *राधिका चौधरी*, *अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन*: **Indian Streams Research Journal (JUNE ; 2012)**

परिकल्पनाएं :

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श :–

शोध हेतु बैतूल जिले के घोड़ा डोंगरी (आदिवासी विकासखण्ड) के 04 हाईस्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् 20 अनुसूचित जाति एवं 20 अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

उपकरण :–

शोध हेतु शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी डॉ. (श्रीमती) सी.भसीन, आरोही मनोविज्ञान केन्द्र, जबलपुर व शैक्षिक उपलब्धि मापन हेतु वार्षिक परीक्षा के अंकों को आधार माना गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय व सीमायें :–

परिकल्पनाओं और प्रदत्तों की विश्वसनीयता को जानने के लिये मध्यमान, मानक विचलन तथा ''टी'' परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध में बैतूल जिले के आदिवासी विकासखण्ड (घोड़ा डोंगरी) के ग्रामीण स्तर के अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जो हाईस्कूल में अध्ययनरत हैं।

परिकल्पना 01 :

अनूसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्र.–01

अनूसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का सार्थकता सम्बन्धी परिणाम

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	गणना से प्राप्त टी का मान	सार्थकता
1.	अनूसूचित जाति	20	32.25	4.0	2.65	0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है
2.	अनुसूचित जनजाति	20	28.5	4.9		
	योग	40				

व्याख्या :–

उपरोक्त तालिका क्रमांक–01 से स्पष्ट होता है कि 30 स्वतंत्रता के अंश पर टी का मान 0.05 स्तर पर व 0.01 स्तर पर क्रमशः 2.04 व 2.75 है, जबकि गणना द्वारा प्राप्त मान 2.65 है, जो कि सारणी के मान से काफी कम है। इसलिये अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सत्यापन :– यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–02

बैतूल जिले के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक–02

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सार्थकता संबंधी परिणाम

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	गणना से प्राप्त टी का मान	सार्थकता
1.	अनूसूचित जाति	20	47	11.66	0.13	0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है
2.	अनुसूचित जनजाति	20	46.5	11.95		
	योग	40				

व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक–02 से स्पष्ट होता है कि 30 स्वतंत्रता के अंश पर टी का मान 0.05 स्तर पर व 0.01 स्तर पर क्रमशः 2.04 व 2.75 है। जबकि गणना द्वारा प्राप्त मान 0.13 है, जो कि सारणी के मान से काफी कम है। इसलिये अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति

Please cite this Article as : *प्रो. असरारूल गनी ,श्रीमती रेखा सूर्यवंशी* & *राधिका चौधरी*, *अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन*: **Indian Streams Research Journal (JUNE ; 2012)**

वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष :

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। अतः दोनों वर्गों के विद्यार्थियों का शिक्षा की ओर रूझाान व उचित अभिवृत्ति देखने को मिलती है।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। दोनों वर्गों में बराबर शिक्षा उपलब्धि का प्रतिशत मिलता है।

सुझाव :–

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण पाया गया। अतः इन वर्गों के विद्यार्थियों की शिक्षा पर पूर्णतः बल दिये जाने की आवश्यकता है। शिक्षा की ओर इन वर्गों का रूझान और बढ़े इसके लिये प्रगतिशील कार्यक्रमों का समावेश आवश्यक है।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति दोनों ही वर्गों की उपलब्धि में लगभग बराबर का प्रतिशत रहा है। अतः इन वर्गों की कक्षा उपलब्धि अधिक से अधिक उच्च हो, ऐसे परामर्श व मार्गदर्शन कार्यक्रमों में क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1.यादव अनुपमा (2005), शिक्षा और समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नईदिल्ली, पृ. क्र. 511
2.पाण्डेय कल्पना, श्रीवास्तव एस.एस. (2007), शिक्षा मनोविज्ञान, टाटा एम.सी.ग्रा. हील, नई दिल्ली।2
3.थर्स्टन (1946) एच.के.कपिल, अनुसंधान विधिया, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा, पृ. क्र. 3483
4.Kumar, Yogesh, Fifth Survey of Educational Research 1988-92 (NCERT), Pg.No. 1648.
5.शर्मा माथुर, प्रभा शशि शर्मा मधुलिका (2009) शिक्षा मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन।
6.खान हुजेफा गौहर, सिंह संजय (2005) ''शिक्षा और समाज'' अर्जुन पब्लिशिंग नई दिल्ली, पृ. क्र. 113, 97

Please cite this Article as : *प्रो. असरारूल गनी ,श्रीमती रेखा सूर्यवंशी & राधिका चौधरी , अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन* **: Indian Streams Research Journal (JUNE ; 2012)**